पोस्ट एम. ए. अनुप्रयुक्त हिंदी भाषाविज्ञान डिप्लोमा (आगरा एवं दिल्ली केंद्र)

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा और दिल्ली

(मानव संसाधन विकास मंत्रालय, शिक्षा विभाग, भारत सरकार की स्वायत्तशासी संस्था)

पोस्ट एम. ए. अनुप्रयुक्त हिंदी भाषाविज्ञान डिप्लोमा

<u>पाठ्यवस्तु</u>

प्रश्नपत्र - 1.	भाषा विज्ञान और उसका अनुप्रयोग	पूर्णांक - 100
प्रश्नपत्र - 2.	हिंदी संरचना	पूर्णांक - 100
प्रश्नपत्र - 3.	हिंदी का सामाजिक संदर्भ	पूर्णांक - 100
प्रश्नपत्र - 4.	वैकल्पिक प्रश्नपत्र	पूर्णांक - 100

(क) भाषा शिक्षण : सिद्धांत और व्यवहार

(ख) कंप्यूटरीकृत भाषाविज्ञान

(ग) अनुवाद सिद्धांत और व्यवहार

(घ) शैली विज्ञान : सिद्धांत और व्यवहार

प्रश्नपत्र- 1

भाषाविज्ञान और उसका अनुप्रयोग

पूर्णांक : 100

उद्‌देश्य :-

विद्‌यार्थी :-

1. भाषाविज्ञान के विभिन्न आयामों से परिचित हो सकेंगे।
2. भाषाविज्ञान के प्रमुख अंगों के बारे में विस्तार से जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
3. अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान की अवधारणा तथा इसके विभिन्न अध्ययन क्षेत्रों के बारे में ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
4. व्यतिरेकी विश्लेषण तथा त्रुटि विश्लेषण के सिद्‌धांत, अनुप्रयोग तथा प्रक्रिया आदि से परिचित हो सकेंगे।

1. भाषा और भाषाविज्ञान

(क) भाषा एवं संप्रेषण; मानव भाषा और मानवेतर भाषा में अंतर; भाषा के लक्षण; भाषा के प्रकार्य; भाषा के उच्चरित एवं लिखित रूप; भाषा और वाक् (लांग एवं परोल); भाषा-व्यवस्था और भाषा-व्यवहार; भाषा अध्ययन के आयाम-समकालिक व कालक्रमिक; भाषा और समाज

(ख) भाषाविज्ञान से अभिप्राय; भाषाविज्ञान और व्याकरण; भाषाविज्ञान सिद्‌धांत के अनुप्रयोग; भाषाविज्ञान के विभिन्न आयाम

2. भाषाविज्ञान के अंग

(क) ध्वनि विज्ञान

स्वन विज्ञान और स्वनिम विज्ञान - स्वन, स्वनिम और संस्वन; स्वनिम विज्ञान और उसकी शाखाएँ - उच्चारणात्मक, श्रवणात्मक एवं भौतिक स्वन विज्ञान; वागेंद्रियाँ; खंडीय ध्वनियाँ - स्वर और व्यंजन; खंडेतर ध्वनियाँ - बलाघात, अनुतान, अनुनासिकता, मात्रा और संहिता; स्वनिम और लेखिम; अक्षर और आक्षरिक संरचना

(ख) रूपविज्ञान

रूप, रूपिम और संरूप की संकल्पना; रूपिम के प्रकार; रूप निर्धारण के सिद्धांत; विभक्ति एवं व्युत्पादन; शब्द एवं शब्द वर्ग; रूपावली एवं व्याकरणिक कोटियाँ; समास व समस्त पद; संधि एवं रूपस्वनिम-विज्ञान; शब्द, पद एवं पदबंध

(ग) वाक्य विज्ञान

वाक्य विज्ञान- अर्थ एवं स्वरूप; वाक्य संरचनाएँ; आधारभूत वाक्य; उपवाक्य; वाक्य के प्रकार- संरचना और अर्थ के आधार पर; शब्दक्रम एवं अन्विति; अंत:कैंद्रित एवं बहि:कैंद्रित रचना; रूपांतरण प्रजनक सिद्धांत की प्रमुख विशेषताएँ

(घ) अर्थ विज्ञान

अर्थ की संकल्पना; अर्थद्योतन-अभिधा, लक्षणा, व्यजंना; अर्थ संबंध- समानार्थकता, विपरीतार्थकता एवं अवनामिता (hyponymy); अर्थ के घटक; अर्थ परिवर्तन की दिशाएँ

प्रोक्ति संरचना की संकल्पना; प्रोक्ति के घटक; प्रोक्ति और पाठ में अंतर

3. अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान एवं प्रोक्ति

अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान - परिभाषा, स्वरूप और क्षेत्र; भाषा सिद्धांत का अनुप्रयोग; अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान के संदर्भ (ज्ञानक्षेत्र का संदर्भ) - मनोभाषाविज्ञान, समाजभाषाविज्ञान, कंप्यूटरीकृत भाषाविज्ञान; विधाविशेष का संदर्भ - अनुवाद, शैलीविज्ञान, कोश विज्ञान, वाक् चिकित्सा आदि; भाषाशिक्षण का संदर्भ

4. व्यतिरेकी विश्लेषण एवं त्रुटि विश्लेषण

भाषाविज्ञान और व्यतिरेकी विश्लेषण; व्यतिरेकी विश्लेषण: सिद्धांत और प्रकार; तुलनात्मक भाषाविज्ञान और व्यतिरेकी विश्लेषण में अंतर; त्रुटि विश्लेषण - सिद्धांत, प्रक्रिया, प्रकार; व्यतिरेकी विश्लेषण और त्रुटि विश्लेषण में अंतर

<u>नोट</u> :-

सभी ईकाईयों से -

- **कुल चार दीर्घ उत्तरीय प्रश्न विकल्प के साथ पूछे जाएँगे। प्रत्येक प्रश्न 20 अंक का होगा।**
- **कुल चार लघु उत्तरीय प्रश्न विकल्प के साथ पूछे जाएँगे। प्रत्येक प्रश्न 5 अंक का होगा।**

संदर्भ ग्रंथ सूची-

1. वैश्ना नारंग, समसामयिक भाषाविज्ञान, यश पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2008।
2. बाबूराम सक्सैना, सामान्य भाषाविज्ञान, हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, 1995।
3. कृपाशंकर सिंह एवं चतुर्भुज सहाय, आधुनिक भाषाविज्ञान, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010।
4. रवीन्द्र श्रीवास्तव, भोलानाथ तिवारी और के.के. गोस्वामी, (सं.) अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान, आलेख प्रकाशन, दिल्ली, 1980।
5. भोलानाथ तिवारी, भाषाविज्ञान, किताब महल, इलाहाबाद।
6. विजय राघव रेड्डी, व्यतिरेकी भाषाविज्ञान, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, 1986।
7. चतुर्भुज सहाय, स्वन विज्ञान, कुमार प्रकाशन, आगरा
8. Block & Trager, An outline of Linguistic Analysis, 1942, Linguistic Society of America
9. Gleason, H.A., An Introduction to Descriptive Linguistics, 1955, Holt Rinhehart and Winston, New York.
10. Verma, Siddheswas, Critical studies in the Phonetic observation of Indian Grammarians 1961.

प्रश्नपत्र- 2
हिंदी संरचना

पूर्णांक : 100

उद्देश्य :-

विद्यार्थी :-

1. हिंदी भाषा की ध्वनि व्यवस्था तथा स्वनिमिक विशेषताओं को जान सकेंगे।

2. हिंदी की रूप व्यवस्था, शब्द-रूपिम संबंध, शब्द निर्माण प्रक्रिया, शब्द वर्ग तथा विभिन्न व्याकरणिक कोटियों के विस्तार से अवगत हो सकेंगे।

3. हिंदी पदबंधों के विभिन्न प्रकारों का ज्ञान प्राप्त करते हुए विशेष रूप से संरचना एवं क्रिया पदबंध को विस्तार से जान सकेंगे।

4. वाक्य की अवधारणा, स्वरूप, वाक्य रचना की व्याकरणिक युक्तियों तथा वाक्य के प्रकारों का ज्ञान प्राप्त करते हुए वाक्य रूप या प्रक्रिया एवं वाक्य साँचों को स्पष्ट रूप से समझ सकेंगे।

5. हिंदी अर्थ संरचना से संबंधित विभिन्न प्रकारों, प्रक्रियाओं एवं आयामों की जानकारी को समझ सकेंगे।

6. देवनागरी लिपि और हिंदी वर्तनी की विशेषताएँ और उनके कंप्यूटर आधारित अनुप्रयोग की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

1. हिंदी की ध्वनि व्यवस्था

(क) हिंदी ध्वनियों का वर्गीकरण

(ख) हिंदी की स्वनिम व्यवस्था - आधारभूत एवं परिधीय स्वनिम; हिंदी की आक्षरिक संरचना

(ग) खंडेतर ध्वनियाँ - मात्रा, बलाघात, अनुतान, संहिता

(घ) हिंदी की विशिष्ट स्वनिमिक समस्याएँ - महाप्राण, मूर्धन्य, अर्द्धस्वर, अनुस्वर एवं अनुनासिकता, 'अ'-लोप की स्थिति

2. हिंदी की रूप व्यवस्था

(क) शब्द और रूपिम

(ख) शब्द-निर्माण

(i) शब्द साधन और व्युत्पादन- समास, पुनरुक्ति

(ii) रूप साधन- रूप स्वनिमिक प्रक्रिया एवं संधि

(ग) हिंदी के शब्द वर्ग और उनकी रूपावली (उपसर्ग-प्रत्यय)

(घ) व्याकरणिक कोटियाँ- लिंग, वचन, पुरुष, कारक, काल, पक्ष, वृत्ति, वाच्य

3. (क) पदबंध: प्रकार एवं उसकी संरचना

पद एवं पदबंध में अंतर; पदबंध के प्रकार - संज्ञा पदबंध, सर्वनाम पदबंध, विशेषण पदबंध, क्रिया पदबंध, क्रियाविशेषण पदबंध

हिंदी क्रिया पदबंध - हिंदी क्रिया पदबंध की संरचना; हिंदी क्रियाओं के प्रकार - 1. प्रकार्य के आधार पर - अकर्मक, सकर्मक, द्विकर्मक, को-क्रियाएँ 2. प्रेरणार्थक क्रियाएँ; 3. रूप के आधार पर - मिश्र क्रिया और संयुक्त क्रिया

क्रियाविशेषण पदबंध

(ख) हिंदी की वाक्य रचना

वाक्य का स्वरूप (उद्देश्य/विधेय); वाक्य रचना की व्याकरणिक युक्तियाँ - पदक्रम, अन्विति (ने प्रयोग सहित), कारक संबंध (Absolutive-Ergative, Non-Accusative), अर्थसंगति, अध्याहार; वाक्य के प्रकार : रचना की दृष्टि से - सरल वाक्य, संयुक्त वाक्य, मिश्र वाक्य; अर्थ की दृष्टि से- कथानात्मक वाक्य, निषेघात्मक, आज्ञार्थक वाक्य, प्रश्नवाचक वाक्य, संबोधन वाक्य, विस्मयादि बोधक वाक्य, इच्छावाचक वाक्य

वाक्यात्मक प्रक्रियाएँ (Syntactic Processes) : वाक्य रचना की कुछ प्रमुख प्रक्रियाएँ - नामिकीकरण (Nominalization), निजवाचीकरण (Reflexivestion), अकर्तृवाच्चीकरण (Passivisation), प्रेरणार्थीकरण (Causativisation)

वाक्य साँचे - स्वरूप, वाक्य सांचों के अनिवार्य एवं ऐच्छिक घटक; मूलभूत/बीज वाक्य सांचे और व्युत्पन्न वाक्य सांचे

4. हिंदी की अर्थ संरचना

हिंदी में अर्थ-संकोच, अर्थ-विस्तार, रूढ़ीकरण और नवनिर्मिति; हिंदी में तकनीकी पर्याय, समानार्थी शब्द, अनेकार्थी शब्द, अर्थ-क्षेत्र, अर्थ-लक्षण और सहप्रयोग (Collocation)

5. देवनागरी लिपि और हिंदी की वर्तनी

देवनागरी लिपि का परिचय, उसकी विशेषता एवं सीमाएँ; लिपि का मानकीकरण, परिवर्द्धन एवं यांत्रिकीकरण; हिंदी वर्तनी की प्रमुख विशेषताएँ; देवनागरी लिपि का कंप्यूटर आधारित अनुप्रयोग

नोट :-

सभी ईकाईयों से -

- **कुल चार दीर्घ उत्तरीय प्रश्न विकल्प के साथ पूछे जाएँगे। प्रत्येक प्रश्न 20 अंक का होगा।**
- **कुल चार लघु उत्तरीय प्रश्न/ टिप्पणी पूछे जाएँगे। प्रत्येक प्रश्न 5 अंक का होगा।**

संदर्भ ग्रंथ सूची-

1. कामता प्रसाद गुरु, हिंदी व्याकरण, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।
2. रवीन्द्र नाथ श्रीवास्तव, हिंदी भाषा संरचना और प्रयोग, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1980।
3. भोलानाथ तिवारी, हिंदी भाषा की संरचना, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1988।
4. सूरजभान सिंह, हिंदी भाषा संदर्भ और संरचना, साहित्य सहकार, 2008।
5. सूरजभान सिंह, हिंदी का वाक्यात्मक व्याकरण, साहित्य सहकार, 2000।
6. सुधा कालरा और अशोक कालरा, हिंदी का व्यावहारिक ज्ञान, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा, 1987।
7. रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव, हिंदी भाषा संरचना के विविध आयाम, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 2008।
8. के.के. गोस्वामी, आधुनिक हिंदी विविध आयाम, आलेख प्रकाशन, दिल्ली, 2008।

प्रश्नपत्र- 3

हिंदी का सामाजिक संदर्भ

पूर्णांक : 100

उद्देश्य :-

विद्यार्थी :-

1. हिंदी के स्वरूप एवं क्षेत्र का परिचय प्राप्त कर हिंदी के विभिन्न समाजभाषिक अध्ययन सदर्भों को स्पष्ट रूप से समझ सकेंगे।

2. हिंदी की विभिन्न भूमिकाओं का ज्ञान प्राप्त कर भाषा नीति तथा नियोजन के संदर्भ में हिंदी विकास का अध्ययन कर सकेंगे।

3. हिंदी के सामाजिक स्तर, भेदों एवं विशिष्ट शब्दावली का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।

4. भारत के बहुभाषिक परिवेश में हिंदी की भूमिका एवं इसके परिवर्तनशील स्वरूप का आंकलन कर सकेंगे।

1. हिंदी: स्वरूप और क्षेत्र

(क) भाषा का समाजशास्त्रीय अध्ययन; हिंदी का ऐतिहासिक परिचय; हिंदी के संदर्भ में जनपदीय, राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय; हिंदी का क्षेत्र-बोलियाँ, मानक भाषा; हिंदी, हिंदुस्तानी और उर्दू का संदर्भ; भाषाद्वैत की स्थिति; भाषा विकल्पन की स्थिति, भाषा भेदीकरण का सामाजिक आधार; हिंदी की शब्द संपदा और साहित्य संपदा (मानक हिंदी और ब्रज, अवधी आदि बोलियों के साहित्य के संदर्भ में); हिंदी के क्षेत्रीय रूप - पिजन, क्रियोल आदि

(ख) भाषा वैविध्य

भाषा समुदाय, कोड आधात्री, व्यक्ति, बोली और प्रयुक्ति; सामाजिक और प्रयुक्तिपरक शैलियाँ; बोलचाल और शिष्ट भाषा

2. हिंदी की भूमिकाएँ

साहित्यिक भाषा और संपर्क भाषा; राष्ट्रभाषा की संकल्पना; मीडिया और हिंदी; राज भाषा; संविधान में हिंदी; राजभाषा के कार्यान्वयन के उपाय; प्रयोजनपरक प्रयुक्तियाँ

3. भाषा विकास

भाषा नीति तथा भाषा नियोजन; त्रिभाषा सूत्र; यांत्रिक साधनों का विकास और नव शब्द निर्माण; भाषा का आधुनिकीकरण और मानकीकरण: प्रक्रिया और समस्याएँ।

4. सामाजिक स्तर भेद तथा सांस्कृतिक चेतना

सर्वनाम का उपयोग; रिश्ते-नाते की शब्दावली; रंग की शब्दावली

5. संपर्क में भाषा - भाषा अनुरक्षण एवं भाषा विस्थापन; द्विभाषिकता एवं बहुभाषिकता की स्थिति; सामाजिक संस्कृति का माध्यम; दिशा और कार्य क्षेत्र; भारत में बहुभाषिकता, बहुभाषी भारत में हिंदी का स्थान; कोड परिवर्तन - कोड मिश्रण एवं कोड अंतरण

<u>नोट</u> :-

सभी ईकाईयों से -

- **कुल चार दीर्घ उत्तरीय प्रश्न विकल्प के साथ पूछे जाएँगे। प्रत्येक प्रश्न 20 अंक का होगा।**
- **कुल चार लघु उत्तरीय प्रश्न विकल्प के साथ पूछे जाएँगे। प्रत्येक प्रश्न 5 अंक का होगा।**

संदर्भ ग्रंथ सूची-

1. रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव, हिंदी भाषा का समाजशास्त्र, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1994।
2. रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव और रमानाथ सहाय, हिंदी भाषा का सामाजिक संदर्भ, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा, 1984।
3. भोलानाथ तिवारी और मुकुल प्रियदर्शनी, हिंदी की सामाजिक भूमिका, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा चैन्नई, 1982।
4. भोलानाथ तिवारी, हिंदी भाषा की सामाजिक संरचना, साहित्य सहकार दिल्ली, 1994।

5. भरत सिंह, भाषा और समाज, आलेख प्रकाशन, नई दिल्ली, 2002।

6. K.K. Goswami Code Switching in Lehanda- A Socio Linguistic Survey, Kalinga Publication, Delhi, 1994.

7. Anvita Abhi, Managing Indian Multilingualism, Sage Publication, 2001.

8. Gopal Sharma & Suresh Kumar, Indian Bilingualism, (edited) Kendriya Hindi Sansthan,1977.

9. Roger T. Bell, Sociolinguistics, London Bastford, 1976.

10. W. Bright, Sociolinguistics 1966, The Hague Mouton.

11. J.A. Fishman, The Sociology of Language, 1972, Mass, Newbury.

12. J.A. Fishman, Sociolinguistics, 1972, Mass, Newbury.

13. J.J. Gumperz & D.H. Hymes (eds.) Directions in Sociolinguistics 1972, New York, Holt, Rinehard & Winston.

14. M.A.K. Haliday, Language as Social Semiotic, 1978, London, Edward Arnold.

15. R.N. Shrivastava & R.S. Gupta, Sociolinguistics

वैकल्पिक प्रश्नपत्र- 4

(क) भाषा शिक्षण : सिद्धांत और व्यवहार

(ख) कंप्यूटरीकृत भाषाविज्ञान

(ग) अनुवाद सिद्धांत और व्यवहार

(घ) शैली विज्ञान : सिद्धांत और व्यवहार

वैकल्पिक प्रश्नपत्र- 4 (क)

भाषा शिक्षण : सिद्धांत और व्यवहार

पूर्णांक : 100

उद्देश्य :-

विद्यार्थी :-

1. भारत के राष्ट्रीय, सामाजिक, शैक्षिक, मनोवैज्ञानिक एवं भाषिक संदर्भ में हिंदी शिक्षण को समझ सकेंगे।
2. भाषाशिक्षण की आधारभूत संकल्पनाएँ- मातृभाषा/प्रथम भाषा, द्वितीय भाषा व विदेशी भाषा के रूप में अन्य भाषा शिक्षण की संकल्पना, अंतर, प्रयोजन आदि का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
3. अन्य भाषा शिक्षण की विधियाँ और भाषाई कौशलों तथा भाषाई कौशलों के शिक्षण से परिचित हो सकेंगे।
4. अन्य भाषा शिक्षण के आधार तथा शिक्षण सामग्री निर्माण के विषय में ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
5. अन्य भाषा शिक्षण के रूप में हिंदी शिक्षण पाठयोजना का निर्माण कर सकेंगे।
6. भाषाशिक्षण में तकनीकी उपकरणों और माध्यमों के प्रयोग के विषय में सीख सकेंगे।
7. भाषा मापन, मूल्यांकन और परीक्षण के विषय में सैद्धांतिक व व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

पाठ्यवस्तु-

(क) सिद्धांत 70

1. भाषाशिक्षण के संदर्भ: भाषाशिक्षण का राष्ट्रीय, सामाजिक, शैक्षिक, मनोवैज्ञानिक एवं भाषिक संदर्भ

2. भाषाशिक्षण की आधारभूत संकल्पनाएँ:

(क) मातृभाषा/प्रथम भाषा, अन्य भाषा की संकल्पना- द्वितीय एवं विदेशी भाषा

(ख) मातृभाषा, द्वितीय भाषा और विदेशी भाषा के शिक्षण में अंतर; सामान्य और विशिष्ट प्रयोजन के लिए भाषा शिक्षण

(ग) अन्य भाषा के रूप में भारत तथा विदेशों में हिंदी शिक्षण

3. भाषा शिक्षण की विधियाँ:

(क) व्याकरण, अनुवाद, संरचनात्मक, मौखिक, प्रत्यक्ष, संप्रेषणात्मक विधि एवं अभिक्रमित अनुदेशन

(ख) भाषाई कौशल- श्रवण, भाषण, वाचन, लेखन

(ग) भाषा का कौशल के रूप में शिक्षण; भाषा कौशलों के विकास की तकनीक और अभ्यास

4. भाषा शिक्षण के आधारः

(क) व्यतिरेकी विश्लेषण व त्रुटि विश्लेषण का अन्य भाषा शिक्षण में महत्व

(ख) भाषा शिक्षण सामग्री निर्माण की संकल्पना; सामग्री निर्माण के सोपान- चयन, अनुस्तरण व प्रस्तुतिकरण

(ग) प्रयोजन और प्रयोक्ता सापेक्ष सामग्री निर्माण की समस्याएँ

5. पाठनियोजनः

(क) अर्थ, आवश्यकता, पाठयोजना निर्माण के तत्व, विशेषताएँ, प्रकार, निर्माण के उपागम - हरबर्ट पाठयोजना, मूल्यांकन उपागम पाठयोजना, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान प्रशिक्षण परिषद (एन.सी.ई.आर.टी.) की पाठ योजना।

(ख) अन्य भाषा शिक्षण की पाठयोजनाएँ

(I) भाषाई कौशल पाठयोजनाएँ

(II) साहित्यिक पाठ योजनाएँ

6. भाषा शिक्षण में तकनीकी उपकरणों और माध्यमों का प्रयोगः

भाषा प्रयोगशाला तथा अन्य प्रौद्योगिकी में तकनीकी उपकरण और माध्यम व उनका प्रयोग; कंप्यूटर संसाधित भाषा शिक्षण, ई-शिक्षण

7. भाषा मापन, मूल्यांकन और परीक्षणः

(क) मापन का अर्थ, कार्य विधियाँ, स्तर, त्रुटियाँ, विधियाँ और मापन विधियों की विशेषताएँ

(ख) मूल्यांकन का अर्थ, महत्व, प्रविधियाँ, सोपान, प्रविधियों का वर्गीकरण

(ग) परीक्षण का अर्थ, परीक्षण के प्रकार- 1. प्रमाणीकृत परीक्षण 2. अध्यापक निर्मित परीक्षण। प्रमाणीकृत परीक्षण के सोपान; प्रमाणीकृत व अध्यापक निर्मित परीक्षण में अंतर

(ख) व्यवहार 30

8. (क) निम्नलिखित कौशलों तथा साहित्यिक विधाओं से संबंधित एक-एक पाठयोजना-

(I). मौखिक कौशल (II) वर्तनी कौशल (III) व्याकरणिक संरचना (IV) रचना (V) प्रयोग। गद्य और पद्य पाठ योजना

(ख). परीक्षण निर्माण - किसी एक परीक्षण का निर्माण-

(I) प्रवेश परीक्षण (II) अभिक्षमता परीक्षण (III) उपलब्धि परीक्षण (IV) निदानात्मक परीक्षण (V) दक्षता परीक्षण

नोट :-

खंड (क) की सभी ईकाईयों से -

- **कुल तीन दीर्घ उत्तरीय प्रश्न विकल्प के साथ पूछे जाएँगे। प्रत्येक प्रश्न 20 अंक का होगा।**
- **कुल दो लघु उततरीय प्रश्न विकल्प के साथ पूछे जाएँगे। प्रत्येक प्रश्न 5 अंक का होगा।**

खंड (ख) से -

- **एक दीर्घ उत्तरीय प्रश्न विकल्प के साथ पूछा जाएगा। यह प्रश्न 20 अंक का होगा।**
- **कुल दो लघु उततरीय प्रश्न विकल्प के साथ पूछे जाएँगे। प्रत्येक प्रश्न 5 अंक का होगा।**

संदर्भ ग्रंथ सूची-

1. लक्ष्मीनारायण शर्मा, शिक्षण निर्माण और प्रविधि, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा, 1985।

2. लक्ष्मीनारायण शर्मा, भाषा शिक्षण, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा।

3. ब्रजेश्वर वर्मा, भाषा शिक्षण और भाषाविज्ञान, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा, 1989।

4. रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव, भाषा शिक्षण, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2005।

5. सतीश कुमार रोहरा और सूरजभान सिंह, हिंदी शिक्षण : अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा, 1988।

6. गीता शर्मा, हिंदी शिक्षण सिद्धांत और व्यवहार, श्री हरिअंग प्रकाशक, मेरठ, 2009।

7. गीता शर्मा, शैक्षिक तकनीकी और प्रबंधन के आधार, केदारनाथ, सामनाथ मेरठ।

वैकल्पिक प्रश्नपत्र- 4 (ख)
कंप्यूटरीकृत भाषाविज्ञान

पूर्णांक : 100

उद्देश्य :-

विद्यार्थी :-

1. प्राकृतिक भाषा संसाधन और भाषा प्रौद्योगिकी की सामान्य अवधारणा, अध्ययन पद्धति, अध्ययन पक्ष, प्रकार और अनुप्रयोग आदि को समझ सकेंगे।
2. कंप्यूटरीकृत भाषाविज्ञान की प्रक्रिया को समझते हुए कंप्यूटरीकृत भाषाविज्ञान के विभिन्न अध्ययन क्षेत्रों से परिचित हो सकेंगे।
3. पार्सिंग, जनरेशन की अवधारणा और विश्लेषण प्रक्रिया का विस्तार से ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
4. कॉर्पस संसाधन एवं विश्लेषण युक्तियों का विस्तार से ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
5. कंप्यूटरीकृत भाषाविज्ञान से जुड़े व्याकरणिक सिद्धांतों और इसके विभिन्न अनुप्रयोगों से परिचित हो सकेंगे।

पाठ्यवस्तु-

1. **प्राकृतिक भाषा संसाधन** - अभिप्राय; प्राकृतिक भाषा संसाधन की पद्धतियाँ; प्राकृतिक भाषा संसाधन और कृत्रिम बुद्धि

2. **भाषा प्रौद्योगिकी** -अभिप्राय, प्रकार और अनुप्रयोग

3. **कंप्यूटरीकृत भाषाविज्ञान** - तात्पर्य'; कंप्यूटरीकृत भाषाविज्ञान की प्रक्रिया; कंप्यूटरीकृत भाषाविज्ञान के क्षेत्र - ध्वनि, रूपिम और पदबंध वाक्य

4 (i) **पार्सिंग** -अभिप्राय; पार्सिंग के प्रकार - टॉप डाउन, बॉटम डाउन और चार्ट

(II) **जेनरेशन** - जेनरेशन की अवधारणा, कथ्य चयन और संगठन के उपागम, वाक्य योजना

5. **कॉर्पस संसाधन :** अभिप्राय, कार्पस के प्रकार - एकभाषिक, द्विभाषिक और समानांतर, वाक और पाठ कार्पस, अनुप्रयोग

6. **कार्पस विश्लेषणात्मक युक्तियाँ** - टैगिंग, टैगसेट, चंकिंग

7. **व्याकरणिक सिद्धांत** - शब्द प्रकार्यात्मक व्याकरण, संदर्भ मुक्त व्याकरण, पदबंध रचना व्याकरण, टैग व्याकरण, कारक व्याकरण (पाणिनि), जी बी सिद्धांत

8. **कंप्यूटरीकृत भाषाविज्ञान के अनुप्रयोग** - मशीनी अनुवाद, वाक् प्रौद्योगिकी (पाठ से वाक् और वाक् से पाठ), ओ.सी.आर., वर्तनी जाँचक, व्याकरण जाँचक।

<u>नोट</u> :-

सभी ईकाईयों से -

- **कुल चार दीर्घ उत्तरीय प्रश्न विकल्प के साथ पूछे जाएँगे। प्रत्येक प्रश्न 20 अंक का होगा।**
- **कुल चार लघु उततरीय प्रश्न विकल्प के साथ पूछे जाएँगे। प्रत्येक प्रश्न 5 अंक का होगा।**

संदर्भग्रंथ

1. Natural language Processing: A panian perspective, Akshar Bharati, Vineet chaitanya, and Rajiv sangal, 1996.

2. Artificial Intelligence, Elaine Rich, Texas, 2004.

3. Natural language processing kumar, ela, I.K. international Publishing House Pvt. Ltd., 2011.

4. Computational Linguistics, Grisman, 1985.

5. Artificial intelligence Andres, AM & Abans press, 2016.

वैकल्पिक प्रश्नपत्र- 4 (ग)

अनुवाद सिद्धांत एवं व्यवहार

पूर्णांक : 100

उद्देश्यः

विद्यार्थी :

1. अनुवाद के स्वरूप एवं प्रकृति से जुड़े विभिन्न पहलुओं का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे तथा विभिन्न संदर्भों में अनुवाद के महत्व एवं प्रासंगिकता को समझ सकेंगे।
2. अनुवाद की प्रक्रिया का विस्तार एवं गहराई से अध्ययन करते हुए विभिन्न विद्वानों द्वारा प्रतिपादित अनुवाद प्रक्रिया में मॉडलों एवं प्रासंगिक विषयों की जानकारी हासिल कर सकेंगे।
3. अनुवाद के विभिन्न प्रकारों के बारे में समझ सकेंगे साथ ही अनुवाद की सीमाओं से परिचित हो सकेंगे।
4. अनुवाद से जुड़ी 'अननुवादनीयता' 'पुनरीक्षण' मूल्यांकन, आशु अनुवाद जैसी विशिष्ट अवधारणाओं का स्पष्ट ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

पाठ्यवस्तु-

(क) सिद्धांत **70**

1. अनुवाद और भाषाविज्ञान

अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान का अनुवाद से संबंध; अनुवाद में भाषाविज्ञान की भूमिका, व्यतिरेकी विश्लेषण और अनुवाद; अर्थ निर्धारण और कोश निर्माण; आधुनिकीकरण में अनुवाद का योगदान

2. अनुवाद की प्रकृति

अनुवाद की परिभाषा और उसकी समीक्षा (प्रकार्य के आधार पर); अनुवाद का सीमित और विस्तृत स्वरूप; अनुवाद विज्ञान, कला और कौशल के रूप में

3. अनुवाद प्रक्रिया

अनुवाद प्रक्रिया के तीन चरण- विश्लेषण, अंतरण, पुनर्गठन, रूपगत और प्रकार्यात्मक समुतल्यता। अर्थयोग, अर्थक्षति, अर्थांतरण।

4. अनुवाद के प्रकार

अंतःभाषिक (अन्वयांतर), अंतरभाषिक (भाषांतर) और अंतर-प्रतीकात्मक, (प्रतीकांतर) शब्द-प्रतिशब्द, शाब्दिक, भावानुवाद और छायानुवाद। भाषिक और सांस्कृतिक अनुवाद। परोक्ष अनुवाद, सारानुवाद।

5. अनुवाद की सीमाएँ

भाषापरक, सामाजिक-सांस्कृतिक, पाठपरक (प्रयोजनपरक और पाठकगत आयाम)

6. अनुवाद और प्रयुक्ति : समस्याएँ

प्रशासन, वाणिज्य, विज्ञान और प्रौद्योगिकी, जनसंचार, साहित्यिक अनुवाद की समस्याएँ।

(ख) व्यवहार — 30

प्रशासन, वाणिज्य, विज्ञान और तकनीकी क्षेत्र, साहित्य, जनसंचार प्रयुक्तियों पर तीन-तीन औपचारिक अभ्यास कराए जाएँगे। इनमें से दो अंग्रेजी से हिंदी और एक हिंदी से अंग्रेजी में होगा। इन सभी का औपचारिक मूल्यांकन होगा।

<u>नोट</u> :-

खंड (क) की सभी ईकाईयों से -

- **कुल तीन दीर्घ उत्तरीय प्रश्न विकल्प के साथ पूछे जाएँगे। प्रत्येक प्रश्न 20 अंक का होगा।**
- **कुल दो लघु उतत्तरीय प्रश्न विकल्प के साथ पूछे जाएँगे। प्रत्येक प्रश्न 5 अंक का होगा।**

खंड (ख) से - **प्रशासन, वाणिज्य, विज्ञान और तकनीकी क्षेत्र, साहित्य जनसंचार प्रयुक्तियों पर तीन-तीन औपचारिक अभ्यास कराए जाएँगे। इनमें से दो अंग्रेजी से हिंदी और एक हिंदी से अंग्रेजी में होगा। प्रत्येक अभ्यास 10 अंक का होगा।**

संदर्भ ग्रंथ सूची-

1. एम.ई. विश्वनाथ अय्यर, अनुवाद कला, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 1987।
2. कैलाश चंद्र भाटिया, अनुवाद कला : सिद्धांत और प्रयोग, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली, 1985।
3. जी. गोपीनाथन, अनुवाद सिद्धांत और प्रयोग, लोक भारती, इलाहाबाद, 2008।
4. नगेंद्र (सं.), अनुवाद विज्ञान : सिद्धांत और अनुप्रयोग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, 1993।
5. कृष्ण कुमार गोस्वामी, अनुवाद विज्ञान की भूमिका, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008।
6. मा.गो. चतुर्वेदी और कृष्ण कुमार गोस्वामी, अनुवाद : विविध आयाम, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा, 1986।
7. रवीन्द्र नाथ श्रीवास्तव और कृष्ण कुमार गोस्वामी, अनुवाद सिद्धांत और समस्याएँ, आलेख प्रकाशन, दिल्ली, 1985।
8. सुरेश कुमार, अनुवाद सिद्धांत की रूपरेखा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1996।

वैकल्पिक प्रश्नपत्र- 4 (घ)

शैली विज्ञान : सिद्धांत और व्यवहार

पूर्णांक : 100

उद्देश्य :-

विद्यार्थी :-

1. शैली वैज्ञानिक अध्ययन के स्वरूप एवं प्रक्रिया का ज्ञानार्जन करते हुए अन्य समकक्ष भाषा विश्लेषण एवं आलोचना पद्धतियों से इसके संबंध को समझ सकेंगे।
2. पाश्चात्य एवं भारतीय काव्यशास्त्र की विभिन्न अवधारणाओं में शैली विज्ञान से संबंधित तत्वों एवं तथ्यों का स्पष्ट विश्लेषण कर सकेंगे।
3. शैली वैज्ञानिक विश्लेषण पद्धति के विभिन्न स्तरों, आधारों एवं प्रायोगिक संकल्पनाओं व प्रतिमानों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
4. साहित्य शिक्षण में शैली विज्ञान के अनुप्रयोग को समझते हुए चयनित साहित्यिक कृतियों के संदर्भ में व्यावहारिक अध्ययन प्राप्त कर सकेंगे।

पाठ्यवस्तु-

(क) सिद्धांत **70**

70

1. शैलीविज्ञान : क्षेत्र और प्रयोजन

(क) आलोचना का भाषावादी दृष्टिकोण और संरचनात्मक विश्लेषण पद्धति। शैलीविज्ञान : भाषाविज्ञान का अनुप्रायोगिक क्षेत्र

(ख) बहिरंग आलोचना (Extrinsic criticism) और अंतरंग आलोचना (Intrinsic criticism)

(ग) शैलीविज्ञान : आलोचना का भाषापरक प्रतिमान, स्वरूप और प्रयोजन, शैलीविज्ञान और सौंदर्यशास्त्र, शैलीविज्ञान और प्रतीकविज्ञान, शैलीविज्ञान और साहित्यशास्त्र : शैलीविज्ञान और भाषाविज्ञान, शैलीविज्ञान और साहित्यिक आलोचना।

(घ) साहित्य अध्ययन का स्वायत्त क्षेत्र अथवा मिश्र ज्ञानानुशासन

2. शैलीविज्ञान का ऐतिहासिक संदर्भ

(क) काव्यशास्त्र और शैलीविज्ञान

(ख) नई समीक्षा और शैलीविज्ञान

(ग) प्राग (फंक्शनल क्रिटिसिज्म), फ्रेंच (एक्सप्लिकेशन-डिटेक्ट), जर्मन वाल्टश फारशुंग, स्कूल और शैलीविज्ञान

(घ) रूसी रूपवाद और शैलीविज्ञान

3. शैली और शैलीविज्ञान

(क) शैली : परिभाषा और व्युत्पत्ति, भारतीय साहित्यशास्त्र में शैली, पाश्चात्य काव्यशास्त्र में शैली, विज्ञान में शैली संबंधी अवधारणाएँ- शैली विचारों का आवरण, अलंकरण, व्यक्ति-वैशिष्ट्य की अभिव्यक्ति, सहेतुक विचलन, चयन और संसर्ग, वाक्योपरि (पाठपरक) समुच्चय।

(ख) भाषिक प्रकार्य-बूलर, रोमन याकोब्सन और हैलिडे।

(ग) शब्द शक्तियाँ, भाषिक प्रकार्य और काव्यात्मकता।

(घ) काव्यभाषा, काव्यात्मक भाषा और कवि की भाषा।

(ङ) काव्यभाषा और तर्क भाषा।

(च) साहित्यिक और भाषिक शैली।

(छ) काव्य शैली और इसका भाषिक आधार

4. साहित्यिक संरचना और भाषिक विश्लेषण

(क) भाषा विश्लेषण के तीन स्तर : अर्थ, व्याकरण और शब्दकोश और अभिव्यक्ति स्तर और लेखन पद्धति।

(ख) पर्यायवाचिता, अनेकार्थकता, समध्वन्यात्मकता और अनेक ध्वन्यात्मकता।

(ग) संरचना और बनावट।

(घ) काव्य प्रतीक और काव्य में प्रतीक।

5. शैलीविज्ञान की कुछ प्रायोगिक संकल्पनाएँ और प्रतिमान

अग्रप्रस्तुति प्रतिमान, समानांतरता, तुल्यार्थक सिद्धांत, अर्द्धवाक्य, हिल का सादृश्य सिद्धांत, चयन संयोजन प्रतिमान, पाठ भाषावैज्ञानिक प्रतिमान, शैलीचिह्नक, कथानकशास्त्रीय प्रतिमान, संरचनात्मक शैलीविज्ञान प्रतिमान।

6. साहित्य शिक्षण और शैलीविज्ञान

साहित्य शिक्षण, कविता शिक्षण, कहानी शिक्षण, नाटक शिक्षा, गद्य शिक्षण और शैली विज्ञान।

(ख) व्यवहार 30

कुछ साहित्यिक कृतियों का शैलीवैज्ञानिक अध्ययन :

बीन भी हूँ और मैं तुम्हारी रागिनी भी हूँ (महादेवी वर्मा) सोन मछली (अज्ञेय) मैया मोरि मैं नहीं माखन खायो (सूरदास), राम की शक्ति पूजा (निराला)

पूस की रात (कहानी- प्रेमचंद), क्रोध (निबंध-रामचंद्र शुक्ल), आषाढ़ का एक दिन (एकांकी- मोहन राकेश)

नोट :-

खंड (क) की सभी ईकाईयों से -

- **कुल तीन दीर्घ उत्तरीय प्रश्न विकल्प के साथ पूछे जाएँगे। प्रत्येक प्रश्न 20 अंक का होगा।**
- **कुल दो लघु उतत्तरीय प्रश्न विकल्प के साथ पूछे जाएँगे। प्रत्येक प्रश्न 5 अंक का होगा।**

खंड (ख) से - **पाठ्यक्रम में उल्लिखित कृतियों के शैलीवैज्ञानिक अध्ययन का अभ्यास कराया जाएगा। कुल तीन अभ्यास करने होंगे। प्रत्येक 10 अंक का होगा।**

संदर्भ ग्रंथ सूची-

1. कृष्ण कुमार गोस्वामी, शैलीविज्ञान और आ. रामचंद्र शुक्ल की भाषा, अभिव्यक्ति, प्रकाशन दिल्ली, 1996।
2. कृष्ण कुमार गोस्वामी और देवेंद्र शुक्ल, साहित्य भाषा और साहित्य शिक्षण दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा चेन्नै।
3. कृष्ण कुमार शर्मा, शैलीविज्ञान की रूपरेखा, संधी प्रकाशन, जयपुर, 1974।
4. पाण्डेय शशिभूषण शीतांशु, शैलीविज्ञान का इतिहास, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2007।

5. पाण्डेय शशिभूषण शीतांशु, शैली और शैली विश्लेषण, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, 2007।
6. रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव, संरचनात्मक शैलीविज्ञान, आलेख प्रकाशन, दिल्ली, 1996।
7. रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव, शैलीविज्ञान और आलोचना की नई भूमिका, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा, 1979।
8. सुरेश कुमार, शैलीविज्ञान, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2001।